XIX/148

हा! कृष्णकान्त

[लेखक:— पं० [illegible] अवस्थी]

काल की गति विकराल और अबुद्धि गम्य है। काल के गर्भ में मनुष्य जन्म लेता है जिससे मोह का एक अजस्र स्रोत का प्रवाह फूट निकलता है, और काल के गर्भ में ही मनुष्य अन्तकाल में विलीन हो जाता है, जिससे शोक और वैराग्य का प्रवाह सा उमड़ पड़ता है। पर काल की गति न कभी रुकी है और न रोकी जा सकती है। घड़ी में पेन्डुलम की तरह उसकी हरकत करना ही प्राकृतिक नियम है। जिस समय काल ने किसी को अपनी गोद में लेकर उड़ चलने की ठानी, फिर चाहे दुनियाँ का वह कितना ही प्यारा हो, लोग उसके निधन से कितना ही दुखी क्यों न हों, काल को इस हृदयद्रावक दृश्यों को देखने की जरूरत नहीं।

मोहमयी दुनिया को निर्मोह का पाठ पढ़ाने वाला काल प्रति दिन और प्रतिक्षण किसी न किसी के दरवाजे की जंजीर को खटखटाता है पर माया में लिप्त मानव उस आवाज को सुनकर भी अनसुनी करता है। वह एलान दुनिया वालों के कानों में यही कहता है कि यह दुनियाँ सत् कर्मों, सत् व्यवहारों और परमार्थ के लिए है न कि छल छद्म और डाकेजनी के लिए।

आज हम संसारी ऐसा ही वायुमंडल में दुख सुख और कष्ट तथा पीड़ाओं को सहन करते रहते हैं। कल ३ तारीख को अँधेरी रात में बादलों की गड़गड़ाहट के साथ विकराल काल की सवारी इरविन अस्पताल दिल्ली के एक कमरे में आ उतरी। वहाँ पड़े हुये सैकड़ों मरीजों में से उसने अपनी प्रिय एवं वांछित व्यक्ति को पा लिया। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के भतीजे पं० कृष्णकान्त जी को उसने अपनी विशाल बाहुओं में उठा लिया। परिवार वाले एकटक आँखों से ताकते रह गए। सुपुत्र पं० पद्म कान्त जी, बाबू जी, बाबू जी की पुकार करते ही रह गए पर वह स्वतन्त्र आत्मा इस गुलाम देश की पृथ्वी को, इस शोषित देश के आकाश को तथा इस पीड़ित और विताड़ित भूमिखंड के अन्य जल को छोड़कर शान्ति और पवित्र स्थान पर पहुँच गई।

पूज्य पं० कृष्णकान्त जी बहुत अर्से से बीमार थे। उनका स्वास्थ्य धीरे धीरे उन्हें उस अवस्था को ले जा रहा था जब उनकी आत्मा के रहने के लिये वह उस शरीर को छोड़ने के लिये कदम बढ़ा रहा था। उनके पुत्र पं० पद्म कान्त जी देश की पुकार पर जेल यातना काट रहे थे। पिता की अन्तिम अवस्था में सेवा करने, उनके

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

चरणों पर अपना मस्तक टेकने का अवसर दैव इच्छा से सरकार बरतानिया ने उन्हें दे दिया और वे पैरोल पर रिहा होकर इरविन अस्पताल में आ गए ।

अभी एक सप्ताह भी नही हुआ होगा जब पं० कृष्णकान्त जी के स्वास्थ्य के बारे में महात्माजी ने तार द्वारा चिन्ता प्रगट की थी परन्तु उस समय पर पं० कृष्णकान्त जी की अमर आत्मा से देश प्रेम का जोश हुंकार मार रहा था । उन्होंने पुत्र से इच्छा प्रकट की कि बापू को लिखो कि मुझे भी सत्याग्रह करने की आज्ञा दें। मृत्यु शैया पर भी जो इतनी जोश उनमें बाकी था वह मालवीय खानदान को गौरवान्वित करेगा ।

महामना मालवीय जी के लिये सर्वस्व थे । पद्मकान्त के लिये वे रहनुमा तथा पूज्य पिता थे पर ३५ करोड़ भारतीयों के लिये वे एक सच्चे राष्ट्रीय सैनिक थे । उनके जीवन से देश को जितना लाभ हुआ होगा इसे आंक सकना हमारे लिये आसान नहीं है पर हम आज भी महसूस करते है कि भारत के लिए अभी उनके जीवित रहने की और आवश्यकता थी ।

'वर्तमान' से पूज्य पं० कृष्णकान्त जी का जन्म से ही सहयोग रहा, बरना यों कहिये कि आज 'वर्तमान' जिस रूप में विद्यमान है, उस वेलि के लगाने वाले वही थे । उनहोंने मुसीबतों पर सहायता की, रहनुमाई के मौके पर एक सच्चे भाई की तरह पवित्र सलाह दी और उनके आशीर्वाद से 'वर्तमान' अब तक उनका ही बन कर चलता रहा है । आज 'वर्तमान' का एक सहायक उठ गया है । इससे हमारे शोक को हमारे सिवाय और कौन जान सकता है ।

पूज्य महामना मालवीय जी अपनी ८० वर्ष की अवस्था में इस शोक को कैसे सहन करेंगे । उनकी आत्मा को ही पता होगा, महात्मा गांधी को इस शोक समाचार से कितनी वेदना हुई होगी, यह वह साधना में मस्त योगी ही समझ सकता है । पं० पद्मकान्त जी, तथा अन्य कुटुम्बी किस प्रकार अपनी आंखो से अविरल अश्रु धारा को रोकेंगे, यह ध्यान कर हृदय कम्पित हो जाता है ।

पर, यह समझ कर कि परमात्मा भी अच्छी वस्तु को चुनने में ही पटु है यदि आज कृष्णकान्त जी हमारे से अलग है, तो भी उनका सन्देश हर भारतीय की आत्मा को जागृत करता रहेगा । 'आजादी' के लिये मृत्यु की भी बाजी लगा कर स्वप्न देखा जा सकता है ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

अब उनकी आत्मा स्वर्ग में आजाद भारत का ही चित्र देखती होगी । वे वहां यह सब देख देख कर प्रसन्न होंगे । तब हम भी सन्तोष करें और उनके बताये हुये मार्ग पर चलते रहने का दृढ निश्चय करें ।

वर्तमान परिवार स्वयं इस समय इस शोक समाचार से शोक सागर में डूबा हुआ है, वह मालवीय परिवार कोकिस प्रकार सान्तवना दे, पं० पद्म कान्त के दु:ख को किस प्रकार कम करें और अन्य कुटुम्बियों को किन शब्दों में धैर्य बधावें । हम अपनी अकिंचन अंजलि के साथ पंडित कृष्ण कान्त जी की आत्मा को स्वर्ग में शान्ति मिलने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते है ।

" दैनिक वर्तमान "

.....

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA